अठारह महा-शक्तिपीठ

- एक पौराणिक कथा के अनुसार 'शक्ति' (देवी दुर्गा) ने ब्रह्मा के पुत्र 'दक्ष प्रजापति' की पुत्री 'सती' के नाम से जन्म लिया और पिता की अवज्ञा कर भगवान् शिव से विवाह किया।
- बाद में दक्ष प्रजापति ने कनखल (हरिद्वार) में 'बृहस्पति सर्व' नाम का एक बड़ा यज्ञ किया, जिसमें अपने दामाद भगवान् शिव को नहीं बुलाया। पिता द्वारा न बुलाए जाने और पति द्वारा मना करने पर भी देवी सती हठ कर यज्ञ में सम्मिलित होने गई। वहां पर देवी सती को शिव जी के विरुद्ध अपमान-जनक शब्द सुनने को मिले। इससे आहत होकर देवी सती ने अग्नि-कुंड में कूद कर अपने प्राणों की आहुति दे दी।
- भगवान् शिव को जब इस घटना का पता चला तो क्रोध से उनका तीसरा नेत्र खुल गया। उन्होंने देवी सती के अध-जले शरीर को उठा लिया और तांडव करने लगे।
- सम्पूर्ण विश्व को प्रलय से बचाने के लिए भगवान् विष्णु ने सुदर्शन चक्र से सती के मृत शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर नष्ट कर दिया।
- **देवी सती के मृत शरीर के टुकड़े 51 स्थानों पर जाकर गिरे। चूंकि देवी सती 'माँ शक्ति' (देवी दुर्गा) का अवतार थीं, अतः वे स्थान 'शक्तिपीठ' कहलाये।**
- कालान्तर में इन सभी स्थानों पर देवी के मंदिरों का निर्माण हुआ।
- देवी सती का अगला जन्म पर्वत-राज हिमालय और मैना की पुत्री 'देवी पार्वती' के रूप में हुआ, और उस जन्म में घोर तपस्या कर पुनः भगवान् शिव को पति के रूप में प्राप्त किया।
- आज का भारतीय महाद्वीप उस समय का भारत वर्ष था। आज के सन्दर्भ में उपरोक्त 51 स्थानों में से अनुमानतः केवल 23 स्थान भारत के अंदर हैं, जबकि बाकी स्थान नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, तिब्बत और पाकिस्तान आदि पड़ोसी देशों में हैं।
- आदि शंकराचार्य जी द्वारा रचित 'शंकर संहिता' में "अष्टादश शक्तिपीठ स्तोत्रम्" के निम्नलिखित पाँच श्लोकों में अष्टादश (अठारह) शक्ति-पीठों का वर्णन मिलता है -

लङ्कायाम् शांकरीदेवी कामाक्षी काञ्चिकापुरे। प्रद्युम्ने शृङ्खला देवी चामुण्दा क्रौञ्चपट्टणे॥
अलम्पुरे जोगुलाम्ब श्रीशैले भ्रमराम्बिक। कोल्हापुरमहलक्ष्मी माहुर्यमेकवीरिका॥
उज्जयिन्याम् महाकाळी पीठिकायाम् पुरुहुतिका। ओड्ढ्यायाम् गिरिजादेवी माणिक्या दक्षवाटिके॥
हरिक्षेत्रे कामरूपी प्रयागे माधवेश्वरी। ज्वालायाम् वैष्णवीदेवी गयामाङ्गल्यगौरिके॥
वारणास्याम् विशालाक्षी काश्मीरेतु सरस्वती। <u>अष्टादशैवपीठानि</u> योनिनामपि दुर्लभानि च॥

\- स्कंद पुराण, शंकर संहिता

- **उपरोक्त श्लोकों में वर्णित 18 शक्तिपीठों को 'महा-शक्तिपीठ' कहा जाता है।**
- इन 18 महा-शक्तिपीठों के वर्तमान नाम और स्थान (वर्तमान नगर व राज्य के नाम) उसी क्रम में नीचे दिए जा रहे हैं। पौराणिक-काल से अब तक हुए राजनैतिक परिवर्तनों और नगरों तथा मंदिरों के नामों में बदलाव के कारण इनमें से कुछ शक्तिपीठ के नामों अथवा स्थानों को लेकर मतभेद हो सकते हैं –

1. शंकरी देवी, त्रिंकोमाली (श्रीलंका)
2. कामाक्षी देवी, कांचीपुरम (तमिलनाडु)
3. सुवर्णकला देवी, प्रद्युम्न (पश्चिम बंगाल)
4. चामुंडेश्वरी देवी, मैसूर (कर्नाटक)
5. जोगुलअंबा देवी, अलमपुर (तेलंगाना)
6. भ्रमरांबा देवी, श्रीसैलम (आंध्रप्रदेश)
7. महालक्ष्मी देवी (अम्बा बाई), कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
8. इकवीराक्षी देवी, नांदेड़ (महाराष्ट्र)
9. हरसिद्धी माता, उज्जैन (मध्यप्रदेश)
10. पुरुहुतिका देवी, पीथमपुरम (आंध्रप्रदेश)
11. गिरिजा देवी (बिरजा पीठ), जाजपुर (ओडिशा)
12. मणिकेश्वरी देवी मंदिर, भवानीपटना, कालाहांडी (ओडिशा)
13. कामाख्या देवी, गुवाहाटी (असम)
14. माधवेश्वरी देवी (अलोपी माता), प्रयागराज (उत्तरप्रदेश)
15. ज्वाला देवी और वैष्णो देवी, कांगड़ा (हिमाचलप्रदेश)
16. सर्वमंगला देवी, गया (बिहार)
17. विशालाक्षी देवी, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
18. शारदा देवी, कश्मीर (पाक-अधिकृत कश्मीर)